निज दोष अवलोकन काव्य
हे प्रभु! हे प्रभु!

श्रीमद् राजचंद्र जी विरचित

Shrimad
Rajchandra
Mission
Delhi

Reference for Paryushan Parv 2022

हे प्रभु! हे प्रभु! क्या कहूँ, दीनानाथ दयाल;
मैं तो दोष अनंत का, चाहूँ अब कल्याण ।। 1 ।।

शुद्ध भाव मुझमें नहीं, नहीं सर्व तुझ रूप;
नहीं लघुता या दीनता, क्या कहूँ परम स्वरूप? ।। 2 ।।

(1) शुद्ध भाव मुझमें नहीं (2) नहीं सर्व तुझ रूप (3) नहीं लघुता या दीनता

नहीं आज्ञा गुरुदेव की, अचल करी उर में ही;
आप वचन विश्वास दृढ़, और परमादर नहीं ।। 3 ।।

(4) नहीं आज्ञा गुरुदेव की अचल करी उर में ही
(5) उनके वचन में दृढ़ विश्वास नहीं है और उनके प्रति परम आदर भी नहीं है

योग नहीं सत्संग का, नहीं सत् सेवा योग;
केवल अर्पणता नहीं, नहीं आश्रय अनुयोग ।। 4 ।।

(6) योग (आशय) नहीं सत्संग का (7) सत् सेवा का योग नहीं (8) केवल अर्पणता नहीं
(9) नहीं आश्रय अनुयोग

'मैं पामर क्या कर सकूँ?', ऐसा नहीं विवेक;
शरणागत तुझ चरण की, नहीं अंत समय तक एक ।। 5 ।।

(10) ऐसा नहीं विवेक - अपनी पामर दशा से में क्या कर लूँगा?
(11) शरणागति की अटलता नहीं है

अचिंत्य आपकी महिमा का, नहीं प्रफुल्लित भाव;
अंश न एक स्नेह का, न मिले परम प्रभाव ।। 6 ।।

(12) प्रभु की अचिंत्य महिमा के प्रति प्रफुल्लित भाव नहीं है (13) अंश न एक स्नेह का
(14) न मिले परम प्रभाव

अचल रूप आसक्ति नहीं, नहीं विरह का ताप;
कथा अलभ्य तुझ प्रेम की, नहीं उसका परिताप ।। 7 ।।

(15) अचल रूप आसक्ति नहीं (16) नहीं विरह का ताप
(17) कथा अलभ्य तुझ प्रेम की, नहीं उसका परिताप

भक्ति मार्ग प्रवेश नहीं, नहीं भजन इक तान;
समझ नहीं निज धर्म की, नहीं शुभ देश में स्थान ।। 8 ।।

(18) भक्ति मार्ग में प्रवेश नहीं (19) नहीं भजन दृढ़ भान
(20) समझ नहीं निज धर्म की (21) नहीं शुभ देश में स्थान

काल दोष कलियुग भयो, नहीं मर्यादा धर्म;
तो भी नहीं व्याकुलता, कैसा प्रभु मुझ कर्म ।। 9 ।।

(22) नहीं मर्यादा धर्म (23) तो भी नहीं व्याकुलता

सेवा को प्रतिकूल जो, वो बंधन नहीं त्याग;
देह इंद्रिय माने नहीं, करे बाह्य पर राग ।। 10 ।।

(24) सेवा में प्रतिकूल बंधनों का त्याग नहीं है (25) देह और इंद्रियाँ वश में नहीं रहती
(26) करे बाह्य पर राग

तुझ वियोग सफुरता नहीं, वचन नयन यम नाहीं;
नहीं उदास अन भक्त से, त्यों ही गृहादिक से ही ।। 11 ।।

(27) तुझ वियोग सफुरता नहीं है (28) वचन और नयन संयम में नहीं है
(29) नहीं उदास अन भक्त से, त्यों ही गृहादिक में ही

अहंभाव से रहित नहीं, स्वधर्म संचय नाहीं;
नहीं निवृत्ति भी होत है, अन्य धर्म से कोई ।। 12 ।।

(30) अहंभाव से रहित नहीं (31) स्वधर्म का संचय नहीं
(32) अन्य धर्म की निवृत्ति नहीं होती

ऐसे अनंत प्रकार से, साधन रहित हूँ मैं;
नहीं एक भी सद्गुण है, मुख बताऊँ क्या? ।।13 ।।

(33) साधन रहित हूँ मैं (34) नहीं एक भी सद्गुण है

केवल करुणामूर्ति हो, दीनबंधु दीननाथ;
पापी परम अनाथ हूँ, ग्रहो प्रभुजी हाथ ।। 14 ।।

अनंत काल से भटक रहा, बिना भान भगवान;
जाना नहीं गुरु संत को, छूटा नहीं अभिमान ।। 15 ।।

(35) स्वरूप के भान के बिना भटक रहा हूँ (36) गुरु को संत रूप से नहीं जाना है
(37) छूटा नहीं अभिमान

संत चरण आश्रय बिना, साधन किए अनेक;
पार न उनसे लग सका, उगा न अंश विवेक ।। 16 ।।

(38) संत चरण के आश्रय के बिना अनेक साधन किए (39) विवेक का अंश नहीं उगा

सब साधन बंधन हुए, रहा न कोई उपाय;
सत् साधन समझा नहीं, तो बंधन क्या जाए? ।। 17 ।।

(40) सब साधन बंधन हुए, रहा न कोई उपाय (41) सत् साधन समझा नहीं

प्रभु प्रभु लय लागी नहीं, पड़यो न सद्गुरु पाय;
देखा नहीं निज दोष तो, तरुँ अब कौन उपाय? ।। 18 ।।

(42) प्रभु प्रभु लय लागी नहीं (43) पड़यो न सद्गुरू पाय
(44) देखा नहीं निज दोष को

अधमाधम सबसे पतित, सकल जगत में हूँ;
यह निश्चय आए बिना, साधन करेंगे क्या? ।। 19 ।।

(45) अधमाधम अधिको पतित का निश्चय

पड़ी-पड़ी तुझ पद पंकजे, माँगूँ बारम्बार;
सद्गुरु संत स्वरुप की, दृढ़ता करे भव पार ।। 20 ।।